श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ Jan-2024

ऐनरोलमेन्ट नंबर 8 शहर _____

विद्यार्थी का नाम _____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	प्रतिक्रमण
(२)	सम्यग् दर्शन
(३)	भक्ति से
(४)	आकाश प्रदेश
(५)	शास्त्रार्थ
(६)	नलीनावती
(७)	मौखर्यनामा
(८)	असंघयणी
(९)	प्रमाद के वश
(१०)	क्षमा की साधना
(११)	समचतुरस्त्र संस्थान
(१२)	पुंडरिक ह्रद
(१३)	संतिसुतमं
(१४)	पराघात नामकर्म
(१५)	अतिक्रमण
(१६)	भोजन समारंभ
(१७)	कीलिका संघयण
(१८)	शुभरस
(१९)	हिमवंत-हिरण्यवंतादि
(२०)	श्री अजितनाथभ.

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	कायोत्सर्ग
(२)	काजल
(३)	कृष्णवर्णनामकर्म
(४)	उत्तरकुरु
(५)	अचलभ्राता
(६)	विरति का
(७)	संज्वलनकषाय
(८)	आनुपूर्वी
(९)	उदारता
(१०)	गुरुपक्षाये शिष्यपक्षे
(११)	युगमंदर
(१२)	सामायिक
(१३)	शुभसंस्थान
(१४)	सद्गुरु के
(१५)	पुण्य और पाप

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	शब्दों से मिश्रित
(२)	खाने को
(३)	हंडी
(४)	कुब्ज

(५)	मोटा उदर
(६)	पत्रलेखा
(७)	प्यास
(८)	कडवा
(९)	कारो
(१०)	उच्चश्वास
(११)	वक्रविग्रहगति
(१२)	तत्व
(१३)	ललाटसे
(१४)	शांत हुए हैं
(१५)	खराब
(१६)	न्यग्रोध परिमंडल
(१७)	जीव/प्राणी
(१८)	वश से
(१९)	चरण
(२०)	विलास के

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	8
(२)	7	(७)	2
(३)	6	(८)	3
(४)	1	(९)	5
(५)	10	(१०)	9

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	2000योजन
(२)	6
(३)	20
(४)	58
(५)	10योजन
(६)	34
(७)	0
(८)	17
(९)	4
(१०)	5

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१)	X
(२)	X
(३)	✓
(४)	✓
(५)	X
(६)	✓
(७)	✓
(८)	X
(९)	X
(१०)	✓

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१)	5
(२)	21
(३)	17
(४)	1
(५)	9
(६)	20
(७)	12
(८)	15
(९)	21
(१०)	10

	+		+		+		+		+		+		+		=	

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. प्रतिक्रमण की क्रिया की ऑपरेशन के साथ तुलना -> जिस तरह पहले डॉक्टर शरीर में रहे हुए रोग को, खराबी को पहले खोज निकालते हैं, उसके बाद ऑपरेशन आदि क्रिया करते हैं। उसी तरह साधक अपने जीवन में रहे हुए दोषों को, दुर्गुणों को खोज निकालता है। विविध प्रकार के निष्णातो के उपस्थिती में खराब भाग को या तो रिपेर करने में आता है, नहीं तो काटकर निकाल दिया जाता है। उत्तम साधक भी देवगुरु की साक्षी से, उपस्थिती में भूलों को, दोषों को स्वीकार कर उन्हे अपने जीवन में से निकाल डालता है, इसके लिए क्षमा की साधना के साथ पुरुषार्थ भी करता है, विशेष शुद्धि भी होती है पश्चात कायोत्सर्ग और पच्चक्खाण द्वारा।

२. संस्थान किसे कहते हैं? समचतुरस्त्र संस्थान समझाओ -> संस्थान यानी शरीर की आकृति-आकार। उसके ६ प्रकार हैं 1) समचतुरस्त्र संस्थान - सम याने समान, चतुर यानी चारों, अस्त्र याने कोने-किनारे। इस प्रकार चारों समान किनारे वाली शारीरिक संरचना, आकार-आकृती को समचतुरस्त्र संस्थान कहते हैं। पर्यंक आसन में बैठे हुए व्यक्ति के दोनों घुटनों के मध्य का अन्तर यानी दाये स्कंध से बायें घुटन का अन्तर, बायें स्कंध से दायें घुटने का अन्तर और ललाट और आसन के मध्य का अन्तर ये सारे अन्तर जिस संस्थान में समान रूप से हो उसे समचतुरस्त्र संस्थान कहते हैं। यह शरीर सर्वांग सुंदर, प्रमाणयुक्त अवयववाला, लक्षणयुक्त होता है।

३. अनर्थ दंड का पाँचवा अतिचार समझाओ -> पांचवा अतिचार अनर्थदंड का उपभोग-परिभोगातिरेक अतिचार अपने उपभोग-परिभोग में उपयोग योग्य जो वस्तुयें चाहिए उससे ज्यादा अतिरेक, परिग्रह, बढ़ावा करना। उदा. स्नान के लिये जितना पानी, तेल, साबुन वगैरह चाहिए उससे ज्यादा द्विगुना, चौगुना करके रखना। वस्त्राभूषण आदि, विचित्र प्रकार के भोजन के बारे में, वस्त्रादि ओढ़ने के बारे में अत्यंत आसक्ति रखी हो। रात्रि में बाल गूंथे, गूंथवाये हो, और बारीभारे लिखने का कार्य किया-करवाया हो, झूठे कर्कश वचन बोले हो, असत्य वचन बोले गये हो, लगे हुए ऐसे अतिचार को टालने का यथाशक्ती प्रयत्न करना चाहिए, इस

४. देवांगनाये किसके चरण में वंदन करने आयी और उनके आभूषणों के प्रकार कैसे कैसे थे? -> देवांगनाओ ने प्रभु के पराक्रमी और अच्छी चाल वाले चरणों में स्वयं के ललाट से वंदना की है। दैदिप्यमान आभूषणों से उनके शरीर के अवयव सुशोभित हैं। पैरों में पहने हुए जालबंध घुंघरूओं की आवाज को कंकण, कटिमेखला, कलाप और नूपुर के मनोहर शब्दों में मिश्रित करके, हाव-भाव से अभिप्राय दर्शानेवाले, विलास के प्रकार जिसमें रहे हुए हैं ऐसे अंग विक्षेप से नृत्य करती देवांगनाओ ने नृत्य करके शांतिनाथ प्रभु के अच्छे पराक्रमवाले, अच्छी चालवाले चरणों में वंदना की है। कितनीक देवांगना बाँसुरी बजाती है, कितनीक वीणा, चुटकी, ढोल बजाती है, त्रिपुष्कर वाद्य से गायन प्रस्तुत कर रही है।

५. अचलभ्राता गणधर का गृहस्थ जीवन -> वसुदेव ब्राह्मण पिता, नंदादेवी माता। पिता ने अचलभ्राता को वेद, वेदान्त का अभ्यास करवाके अध्यापक बनाया था। अध्यापक का व्यवसाय साथ में कर्मकांडी के रूप में भी कार्य करते यह विद्वान पंडित स्वपर शास्त्र में पारंगत हुए थे। शास्त्रार्थ सभाओं में आमंत्रण मिलनेपर अनेक देशों में वे जाते थे। विद्वान पंडित अचलभ्राता गणधर के ३०० शिष्य थे। तीर्थंकर महावीर की सर्वज्ञ के रूप में कीर्ति सुनकर अचलभ्राता अपने मन की शंका टालने हेतु खास भगवान के समवसरण में गये। प्रभु के मिठे अमृत वचन से संशय दूर होने से प्रतिबोध पाये और ३०० शिष्यो के साथ विनीत भाव से प्रभु के चरणों में झुक पडे। ४६ वर्ष का गृहस्थाश्रम पूर्ण करके अपने शिष्यो के साथ आर्हती दीक्षा अंगीकार की।